भारत एंटरेप्रेन्योरशिप में बना ग्लोबल लीडर, ग्लोबल एंटरेप्रेन्योरशिप मॉनिटर (जीईएम) 2023–2024 रिपोर्ट के मुताबिक 49 देशों में दूसरे स्थान पर

भारत कारोबार शुरू करने के लिए दुनिया भर में सर्वश्रेष्ठ स्थान है, इस दृष्टि से भारत को ग्लोबल एंटरेप्रेन्योरशिप मॉनिटर (जीईएम) 2023/2024 रिपोर्ट के अनुसार 49 देशों में दूसरे स्थान पर रखा गया है। ये रूझान भारत में विशेषज्ञों के साथ किए गए एक सर्वेक्षण पर आधारित हैं, जिसमें उन्हें 13 एंटरेप्रेन्योरशिप फ्रेमवर्क कंडीशन्स (ईएफसी) पर देश का मूल्यांकन करने के लिए कहा गया।

यह मूल्यांकन एक अर्थव्यवस्था के नेशनल एंटरेप्रेन्योरशिप कॉन्टेक्स्ट इंडैक्स स्कोर (एनईसीआई) और रैंक पर निर्भर करता है, जिसे युनिवर्सिटी ऑफ ग्लासगो एडम स्मिथ बिज़नेस स्कूल द्वारा जनरेट किया गया है। भारत तीन जीईएम देशों में से एक है जिनका ईएफसी मूल्यांकन पर्याप्त से अधिक रहा (नीदरलैण्ड्स और युनाइटेड अरब अमीरात के अलावा)

उंचा स्कोर

फ्रेमवर्क कंडीशन्स के अच्छे स्कोर की वजह से भारत का परफोर्मेन्स मजबूत रहा है, जैसे एंटरेप्रेन्योरशिप को समर्थन करने वाले 'सामाजिक एवं सांस्कृतिक नियम' और 'स्कूल में और स्कूल के बाद एंटरेप्रेन्योरशिप की शिक्षा। यह मात्र पांच देशों में से एक है जहां विशेषज्ञों ने महिला उद्यमियों के लिए सामाजिक सहयोग तथा उनके लिए संसाधनों की सुलभता का मूल्यांकन किया और यह संतोषजनक या बेहतर पाया गया। पिछले साल के दौरान भारत की रैंकिंग चौथे स्थान से आगे बढ़कर दूसरे स्थान पर आ गई है।

जीईएम इंडिया टीम के नेशनल टीम लीडर और एंटरेप्रेन्योरशिप डेवलपमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, अहमदाबाद के महानिदेशक सुनील शुक्ला ने कहा, ''भारत नेशनल ग्लोबल एंटरेप्रेन्योरशिप मॉनिटर (जीईएम) सर्वे 2024 में एंटरेप्रेन्योरशिप कॉन्टेक्स्ट इंडैक्स स्कोर (एनईसीआई) की दृष्टि से 49 देशों में दूसरे स्थान पर रहा है। 2022 में देश 16वें स्थान पर था, 2023 में बड़े उछाल के साथ चौथे स्थान पर और 2024 में दूसरे स्थान पर आ गया। अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने वाले कारकों के साथ भारत का एंटरेप्रेन्योरियल सिस्टम मजबूत हो रहा है।''

यह रिपोर्ट 'दुनिया में बदलाव लाने' के भारतीय उद्यमियों के प्रेरक दृष्टिकोण पर रोशनी डालती है, हर पांच में से चार उत्तरदाता इस तथ्य से सहमत हैं। चार में से तीन उद्यमियों का कहना है कि उन्होंने अपने परिवार की परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए कारोबार शुरू किया। हालांकि चिंता की बात यह है कि इनमें से कुछ उद्यमियों का कहना है कि नौकरी न मिलने की वजह से उन्होंने कारोबार शुरू किया। यह संख्या भी उभरते

बाज़ारों एवं पूर्वी यूरोपीय देशों के समकक्ष या उनसे अधिक हैं, और बड़े पैमाने पर विश्वस्तरीय आर्थिक मंदी की ओर इशारा करती है।